वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई - पत्रिका
वेदान्त पीयूष
वर्ष २४
जनवरी - २०२४
प्रकाशन - ०१

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

जनवरी २०२४

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

विषय सूचि

जनवरी 2024

स्वबोधे नान्य बोधेच्छा आत्मरूपतयात्मनः।
न दीपस्यान्यदीपेच्छा यथा स्वात्मप्रकाशने

(श्लोक - २९)

जैसे दीपक को स्वयं को प्रकाशित करने के लिये अन्य दीप की आवश्यकता नहीं है, वैसे ही ज्ञानस्वरूप आत्मा को स्वयं को जानने के लिये अन्य ज्ञान की आवश्यकता नहीं है।

सन्देश
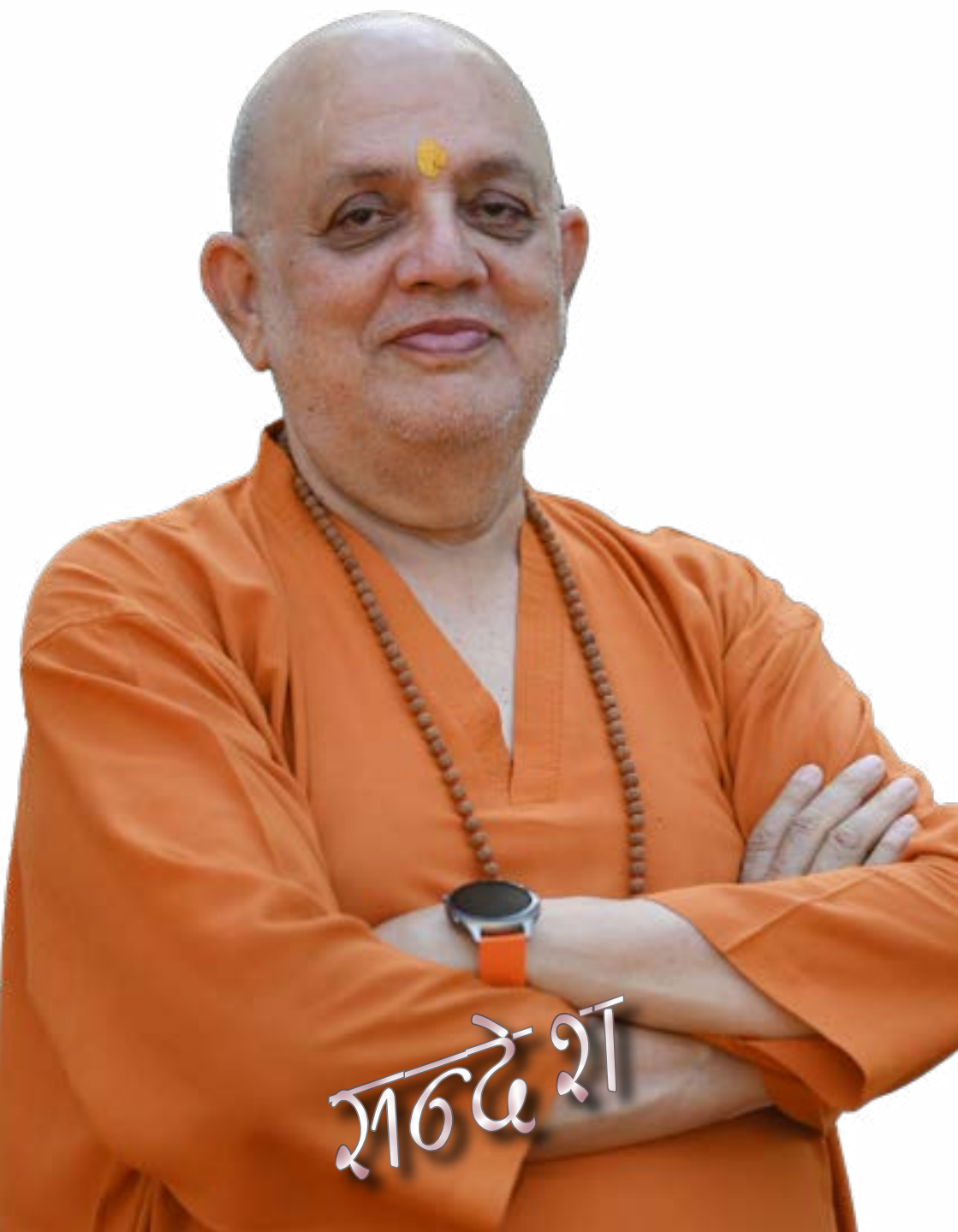
स्थितप्रज्ञ

स्थितप्रज्ञ जब अपने आपके साथ बैठता है, तब अपनी इन्द्रियों को एक कछुए की भांति समेटकर अपने स्वरूप में स्थित रहता है। बाहरी विषम वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति उन्हें बलपूर्वक खिंचती नहीं है। स्थितप्रज्ञ की जो सहज अवस्था है, वही एक अध्यात्मसाधक जिसका लक्ष्य इसी परं अवस्था में जगना है, उनके लिए साधना से सिद्ध किया जाना है। इसे ही शम, दम आदि षट् सम्पत्ति की तरह से बताया जाता है। शम अर्थात् मन के उपर प्रभुत्व, जहां हम मन के वशीभूत होकर प्रतिक्रिया नहीं करते है, किन्तु मन और इन्द्रियां हमारे अधीन है। अतः औचित्य के अनुरूप उसको प्रवृत्त वा निवृत्त किया जा सकें। ऐसा सामर्थ्य विकसित करना यह साधक के लिए कर्तव्यतारूप होता है। इसके लिए जब लक्ष्य के प्रति पूरी लगन से समर्पित साधक प्रयास करता है, तो यह

प्रतीत होता है कि इन्द्रियां अपने रागादि के अधीन होकर, तथा मन अपनी वासना, आसक्ति आदि की वजह से पूर्णतः समर्पित नहीं हो पाता है। बुद्धि में ज्ञान होते हुए भी ज्ञान किसी प्रकार से सहायक नहीं बनता है और इन्द्रियां बलात् अपने अपने विषय की और उसे खिंच कर ले जाती है। ऐसे में अपने अन्दर असमर्थता, उच्चाटन आदि होकर लक्ष्य से विमुख होने की सम्भावना रहती है।

भगवान् बताते हैं कि यह स्वाभाविक है। क्योंकि आज तक बहिर्मुखता से युक्त होकर उसीका महत्व स्थापित है। उसके प्रति भावना बनी हुई है। अतः पहले तो इस बात को स्वीकार कर लेना चाहिए। जब स्वीकृति होती है, तब उसके किनारे रहकर देखने का सामर्थ्य जग पाता है। यह दीखाई पडता है कि मन को रस चाहिए। यह रस बौद्धिक ज्ञान और तर्कादि से मिलता रहे, तो वह अहं की संतुष्टि का निमित्त बनता है और समय आने पर मन, इन्द्रियों समेत बाहर की और ही प्रवण होता है। इससे अपने जीवभाव में और भी निष्ठा दृढ़ होती है। भगवान यहां जो उसका उपाय बता रहे हैं, वहां किसी प्रकार के बौद्धिक आनन्द अथवा इन्द्रियादि के भोग से प्राप्त आनन्द की प्रधानता न हो। किन्तु जिस लक्ष्य की सिद्धि के लिए उसका आश्रय लिया जा रहा है, उसका महत्व स्थापित होने लगे।

जिसका महत्व होता है, उसीमें हमारी भावना जुड़ने लगती है। जब इस परं लक्ष्य का महत्व स्थापित होता है, तब मन की स्वाभाविक भावना उसमें जुड़ने लगती है। इसके लिए भगवान ने बताया कि 'युक्त आसीत मत्परः'। तुम अपनी समस्त इन्द्रियों को समेटकर हमारे परायण होकर बैठों। अर्थात् यह निश्चय करो कि हमारा लक्ष्य किसी क्षणिक बौद्धिक वा ऐन्द्रियक सुख की सिद्धिमात्र नहीं है, किन्तु परमात्मा में जगना है। अध्यात्म लक्ष्य की सिद्धि का प्रयोजन स्वयं भोक्ता बने रहकर क्षणिक भावना की संतुष्टि का आनन्द मात्र लेना नहीं है। किन्तु कर्तृत्व–भोक्तृत्व से युक्त जीवभाव का विसर्जन होकर परं तत्त्व में स्थिति होना है। अतः हमारे प्रति तुम्हारे अन्दर भावना जुड़ जाएं, क्योंकि हम ही तुम्हारे लक्ष्यस्वरूप, तुम्हारी आत्मा की तरह विराजमान है। जैसे जैसे लक्ष्य का महत्व और उसके प्रति भावना की दृढ़ता होती जाती है, वैसे वैसे अन्य का महत्व व भावना शिथिल होते जाते है, क्षूद्र अहं गौण होता जाता है। उस अहं की संतुष्टि के बजाय प्रेमपूर्वक समर्पण होकर उसमें जगने की इच्छा सतत तीव्र होती जाती है। यह ही बाहर के विषयों के महत्व को गौण करके लक्ष्य के प्रति निष्ठा के लिए साधना है।

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्व परिकल्पितं च।

इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

तत्त्वमस्यादि वाक्योत्थं
यज्जीवपरमात्मनोः।
तादात्म्य विषयं ज्ञानं
तदिदं मुक्तिसाधनम्।।

तत्त्वमसि महावाक्य से जो जीव और परमात्मा के ऐक्य का ज्ञान होता है; वही मुक्ति का साधन है ।

पूर्व श्लोक में आचार्य ने शिष्य की मुक्तिविषयक जिज्ञासा को देखा और उसकी प्रशंसा की। अब यहां मुक्ति के साधन को बताया जा रहा है। इसके माध्यम से ग्रंथ के विषय को भी स्पष्ट किया जा रहा है।

आचार्य यहां बताते हैं कि 'तत्त्वमसि आदि वाक्योत्थं......' अर्थात् तत्त्वमसि आदि महावाक्य द्वारा जनित जीव और परमात्मा के ऐक्य का ज्ञान ही मुक्ति के लिए प्रमाण है। अखण्डार्थबोधकानि महावाक्यानि। वेदान्त के ऐसे मन्त्र जिसके माध्यम से अखण्डता के अर्थ का उपदेश किया गया है, वे महावाक्य है। वैसे प्रत्येक वेद के उपनिषद् के अन्तर्गत के चार महावाक्य प्रसिद्ध है। इन महावाक्यों के अन्तर्गत सामवेद के छान्दोग्ध्य उपनिषद् का 'तत्त्वमसि' उपदेशात्मक महावाक्य प्रसिद्ध है। इन महावाक्य के द्वारा हमारी वर्तमान अनुभूति के अत्यन्त विपरीत बात बताई जाती है। अज्ञान में विद्यमान, संसार के तापों से सन्तप्त जीव

खण्ड में जीता है। जीव की दृष्टि से जीव, जगत और ईश्वर तीनों पृथक्-पृथ्क् विराजमान है। स्व के बारेमें अज्ञान की वजह से स्वयं को अभिव्यक्त, संकुचित चेतना मानकर जीता है। अपने आपको उपाधि से संकुचित जीव मानने पर उसे बनानेवाले सृष्टा ईश्वर का भी अस्तित्व होता है। ईश्वर सब के बनानेवाले है, अतः वे सर्वज्ञ है। उसे बनाने के सामर्थ्य से युक्त सर्वशक्तिमान है।

जब कि स्वयं के बारे में यही निश्चय, साथ ही अनुभव है कि हम सीमित है, हमारे पास सामर्थ्य भी बहुत कम है। ज्ञान की दृष्टि से भी हम बहुत अल्प है। अज्ञानवश ऐसी मान्यताओं से युक्त होने से हर धरातल पर भेद, संकुचिता, छोटापन और खण्ड का अनुभव होता है। इस छोटेपन को दूर करने के लिए सतत कुछ न कुछ कामना से युक्त होकर बाहरी विषयों से सुख की चाह करते है। उसके उपरान्त कर्म में स्वाभाविक प्रवृत्ति

होती है। इस प्रकार सतत चेष्टा और संसरण चलता है और तज्जनित तापों से सन्तप्त होते रहते है।

महावाक्य के माध्यम से यह उपदेश किया जा रहा है कि 'तत्त्वमसि'। यह तत्त्वमसि का उपदेश ही **'तादात्म्य विषयं ज्ञानं जीवात्मपरमात्मनोः'** अर्थात् तुम जो स्वयं को संकुचित जीव मान रहे हो, वह वसतुतः ईश्वर ही है। यथार्थ को नहीं जानकर सतही रूप से किए गए निश्चय से ही इसमें भेद प्रतीत होता है। यही संसार के बन्धन का हेतु है। अतः मुक्ति हतु उसका ज्ञान ही एकमात्र साधन है; न किसी प्रकार के कर्म वा चेष्टा साधन हो सकते है। अतः इस महावाक्य के अर्थ को ही गुरुमुख से शास्त्र के श्रवण के द्वारा सम्पन्न किया जाता है। इसके अन्तर्गत जीव कौन है, ईश्वर कौन है, तथा दोनों का ऐक्य कैसे सम्भव होता है? यह पूरी प्रक्रिया को बताकर हमारे वास्तविक अद्वय स्वरूप में जाग्रति होना ही इस ग्रंथ का प्रयोजन है। यही संसार से मुक्ति का हेतु है।

गीता और मानवजीवन
पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी
—: ०७ :—
निष्क्रियता और निवृत्ति

गीता और मानवजीवन

निवृत्ति मनुष्य का मूलभूत धर्म है, ऐसा भगवद्गीता सीखाती है। चौबीस घण्टे में भी हमारी सर्वात् प्रिय प्रवृत्ति कौनसी है? समस्त बोज किनारे रखकर रात को दस बजे के बाद आराम से बिस्तर पर सो जाएं, और भगवान की कृपा से छह-सात कलाक निद्रा का आनन्द लें – यही मेरी सब से प्रिय प्रवृत्ति है। यह सुषुप्ति अर्थात् निद्रा क्या है? यह निवृत्ति का दृष्टान्त है। महिलाएं गरबे में व्याह में सजधज के भारी वस्त्र और आभूषण पहनकर जाती है। किन्तु घर में आकर सबकुछ किनारे कर देती है; क्यो? यह बोज था, अब वह नहीं चाहिए। अब निवृत्त हो जाना है। जब तक निवृत्त नहीं होते है, तब तक नीद नहीं आती है। नीद नहीं आने का कारण क्या है? मन निवृत्त नहीं होता है। मन जब बाहर की झंझटों से मुक्त होता है, 'बस अब हमें डिस्टर्ब मत करों, अब कल देख लेंगें।' इस तरह शनैः शनैः स्थूल और सूक्ष्म देह में से निवृत्त होते है, तब नीद आती है और फिर पूर्ण निवृत्ति का आनन्द अर्थात् सुषुप्ति का आनन्द।

गीता और मानवजीवन

सुबह एलार्म बजता है, तब उठने को कोई तैयार नहीं होता है। निवृत्ति का त्याग करके पुनः कौन इस झंझट में पड़ें? सुषुप्ति का त्याग करना किसी को भी पसंद नहीं है। यही बताता है कि जिसमें आनन्द है, वह प्रिय है अर्थात् आनन्द कहां है? आनन्द निवृत्ति में है।

मनुष्य का अन्तिम ध्येय है - आनन्दप्राप्ति। आनन्द निवृत्ति में है। अर्थात् निवृत्ति हमारा अन्तिम लक्ष्य है। इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर प्रवृत्ति करें तो ही प्रवृत्ति जीवन के लक्ष्य को सिद्ध करने का साधन बनती है, अन्यथा नहीं। इस तरह कर्म करें, प्रवृत्ति करें कि वह निवृत्ति में पर्यवसित हो। उसको कहते है - कर्मयोग। कर्म जब अपने अन्तिम ध्येय को, निवृत्ति को प्राप्त करने का साधन बनता है तब वह योग बन जाता है, अन्यथा वह बोजा बन जाता है; जिससे कि थक जाते है। चालीस-पचास वर्ष हुए न हुए और हम काम करते हुए थक गए ऐसा क्यों? क्योंकि हमारा कर्म योग नहीं है, कर्म मात्र बोजा है। भगवद्गीता मे भगवान् प्रवृत्ति कैसे करें उसका उपदेश देते हैं, क्योंकि प्रवृत्ति ही तो हमारा स्वभाव है।

भगवान् बताते हैं कि कोई भी मनुष्य क्षणभर के लिए भी निष्क्रिय नहीं रह सकता है। शरीर

से शायद हम निष्क्रिय हो तो भी मन से तो हम बहुत प्रवृत्त रहते है। ज्ञानी पुरुषों को छोडकर कोई वीरला ऐसा होगा जो लम्बे समय तक निवृत्त रह सकता हो। जप या ध्यान करने का प्रयत्न करते है, तब हमें यह अनुभव होता ही है कि मन कितना सक्रिय है! ‘श्रीराम जय राम जय जय राम’ पांच छह बार बोलें वहां राम की जगह पर शाम मन में आ जाता है, वृन्दावन से लेकर औस्ट्रेलिया तक मन चक्कर काटकर आता है? क्यों? क्योंकि मन का स्वभाव है। कोई भी मनुष्य क्षणभर के लिए भी निष्क्रिय नहीं बैठ सकता है। अपने अन्दर जो रजोगुण है, अनेक प्रकार की चंचलता हममें भरी पड़ी है, वह किसी न किसी प्रकार से अपनी अभिव्यक्ति का मार्ग खोजती ही है। इसलिए कुछ भी नहीं कर रहे हो तो भी हमारी उंगली घूमती रहती है। दरी पर बैठे हो तो उसके धागे खींचते रहेंगे। टेलिफोन बुथ में टेलिफोन जोड़ते रहेंगे, कितने समय तक टक टक होती रहे, पांच मिनट तक घण्टी बजती रहे तो फिर मनुष्य क्या है? वह पांच मिनट शान्ति मिली? नहीं, उस दौरान वहां रखी हुई टेलिफोन डिरेक्टरी के पन्ने खोलकर उसमें कुछ न
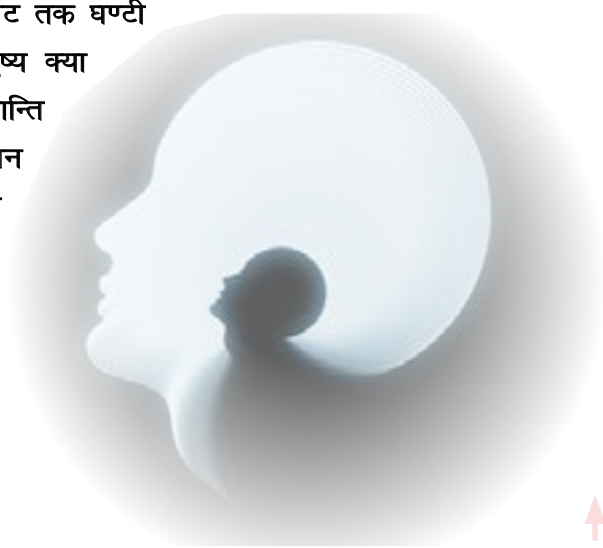
गीता और मानवजीवन

कुछ रेखाएं खींचते रहेंगे। उसमें ऐसे अनेकों प्रकार के लाइनें, आकृतियां दृष्टिगोचर होती है, उसके द्वारा मन में विद्यमान अनेकों विक्षेप ही व्यक्त होते है। चौपाटी पर प्रवचन आयोजित हो तब लोगों को रेती में बढ़िया काम मिल जाता है। प्रवचन सुनते जाएं और हाथ से रेत इधर-उधर करते जाते है। हमें ख्याल ही नहीं होता है कि इस प्रकार का कार्य हमारे द्वारा हो रहा है! अन्दर की जो चंचलता है वही अपनी अभिव्यक्ति करने का मार्ग खोजती रहती है। और इसलिए यह चंचलता को हम दमन नहीं कर सकते है। यदि दमन करते है तो कभी न कभी उसका विस्फोट होगा और अनेकों प्रकार के विकार अपने व्यक्तित्व में जाग्रत करेगा। इसलिए निष्क्रियता हमें स्वीकार्य नहीं है, अभीष्ट भी नहीं है।

भगवान कहते है कि, हाथ पैर जोड़कर निष्क्रिय बैठे रहने से जीवननिर्वाह करना भी दुष्कर हो जाता है। और शरीरयात्रा लम्बे समय तक टिक नहीं पाती है। इस प्रकार हर दृष्टि से देखते हुए प्रवृत्ति के बगैर रहना मनुष्य के लिए सम्भव नहीं होता है।

— ४१ —
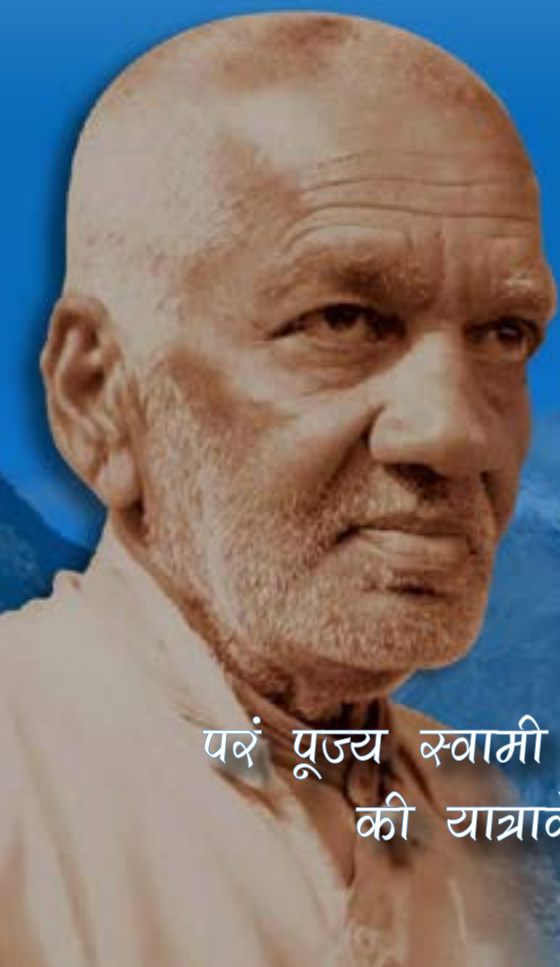
गंगोत्री

परं पूज्य स्वामी तपोवन महाराज
की यात्राके संस्मरण
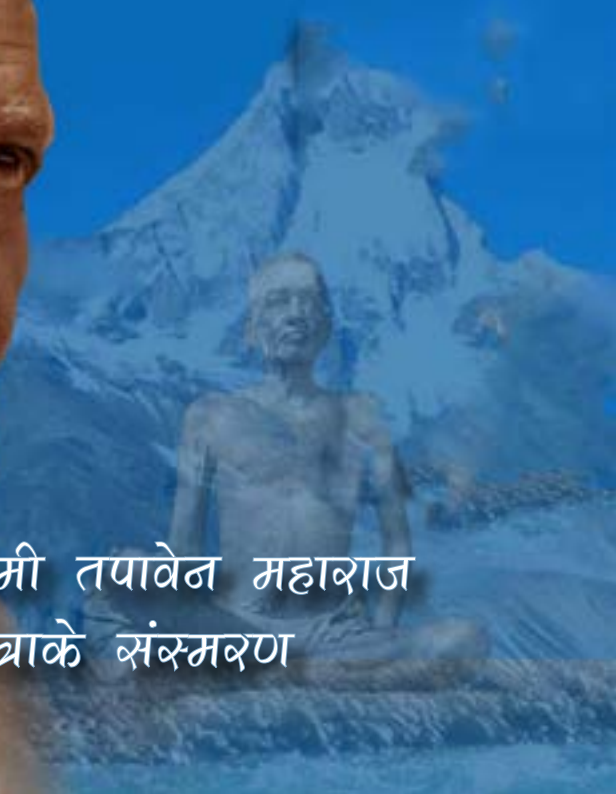
जीवन्मुक्त

आग्रहायण से चैत्र महीने तक गंगोत्री धाम नीचे से उपर तक समान रूप से हिमावृत्त रहता है। इसलिए उस समय वह देश अगम्य ही रहता है। इन्हीं दिनों भालू आदि भी बाहर घूमने तथा शिकार करने में असमर्थ हो जाते है तथा अपनी गुफाओं या वृक्ष कोटरों में छिपे पडे रहते हैं। यदि इस समय भालुओं की गति भी निरुद्ध हो तो मनुष्य की तो बात ही क्या कहनी है?

ज्येष्ठ महीने से लेकर गंगोत्री धाम फिर यात्रा के योग्य बन जाता है और अनेक भक्त तथा तपस्वी लोग वहां की यात्रा आरम्भ कर देते हैं। मेरा विश्वास है कि पतित पावनी भागीरथी के उत्पत्तिस्थान गंगोत्री धाम पहुंचकर, वहां के गंगाजल में निमज्जन कर, उस पवित्र विशाल गंगातट पर बैठे कम से कम दस पांच

मिनट तक साक्षात् ब्रह्ममूर्ति सच्चिदानंद स्वरूपिणी भागीरथी माता का भक्तिपूर्वक ध्यान करनेवाले मनुष्य का जन्म अवश्य कृतार्थ हो जाता है। धन्य पुरुषों के सिवाय और किसी को यह सौभाग्य प्राप्त नही होता।

तदेतत् परमं ब्रह्म द्रवरूपं महेश्वरि!
गंगाख्यं यत् पुण्यतमं पृथिव्यामागतं शिवे!--स्कन्दपुराणम्
पौराणिक लोग भागीरथी की परिभाषा यों देते है- गंगा, गंगा के नाम से, द्रवरूप में प्रवाहित साक्षात् परब्रह्म ही है। महा पातकियों का भी समुद्धार करने के वास्ते स्वयं कृपानिधि परमात्मा ही पुण्यतम जल के रूप में पृथ्वी पर अवतार लेकर आये हैं।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)
श्री मनु और दशरथ चरित्र
– १० –
धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना।
ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना।।

मनु और दशरथ चरित्र

महाराज दशरथ का कैकेयी के प्रति अनुराग उससे और भी स्पष्टरूप से सिद्ध होता है कि जब वे अपने वाक्योंकी प्रामाणिकता को सिद्ध करने के लिए श्री राम की शपथ ले बैठते हैं।
'भामिनि राम सपथ सत मोही' में ममत्व और राग ही प्रतिबिम्बित हो रहा था। इसी सपथ ने उन्हें किंकर्तव्यविमूढ़ बना दिया। एक ओर वे रामभद्र को राज्य देने की घोषणा कर चुके थे, किन्तु दूसरी ओर कैकेयी के आग्रह पर वे ऐसा वरदान दे बैठते हैं जिसकी अन्तिम परिणति श्रीराम के वनगमन के रूप में हुई। राम के परित्याग को भले ही संसार ने उनकी सत्यनिष्ठा के रूप में देखा हो किन्तु महाराज इसे केवल अपनी वासनाजन्य दुर्बलता का ही परिणाम मानते रहे। उन्होंने स्वयं को इसके लिए कभी क्षमा नहीं किया। श्रीराम के वनगमन के पश्चात् भी उनको इस कार्य के औचित्य के प्रति सन्देह था। इसी अनिश्चय की स्थिति में वे सुमन्त को यह आदेश देते हैं कि राघवेन्द्र को केवल चार दिन वन में घुमाकर वापस लौटा ले आया जाए।

पर इस आदेश के बाद भी उनके मन में यह संशय बना ही हुआ था कि रामभद्र के द्वारा यह आग्रह स्वीकार किया जाएगा अथवा नहीं। वे राघव के स्वभाव से भलीभांति परिचित थे। राघवेन्द्र के जीवन में धर्म और आदेश केवल स्वार्थ संरक्षण के कवच मात्र नहीं थे। वे त्यागमय धर्म के ही उपासक थे। अतः महाराज श्री के मन में यह संदेश उठना स्वाभाविक ही था कि मेरे इस आदेश को वे आज्ञा समझकर स्वीकार कर लेंगे अथवा इसे केवल ममत्वजन्य व्याकुलता समझकर अस्वीकार कर देंगे। इसीलिए उन्होंने सुमन्त से यह भी अनुरोध किया था कि यदि रघुवीर लौटना स्वीकार न करें तो उनसे अनुरोध करना कि मिथिलेशनन्दिनी को अवश्य लौट आने का आदेश दे दें।

महाराज श्री के इस अनुरोध को प्रभु ने अस्वीकार कर दिया। उन्होंने इसे वात्सल्य और ममता के आधिकजन्य व्याकुलता के परिणाम के रूप में देखा। मिथिलेशनन्दिनी ने भी लौटना अस्वीकार कर दिया। लक्ष्मण के लौटने का तो कोई प्रश्न ही न था। राघवेन्द्र को छोड़कर लक्ष्मण लौट सकते हैं, स्वप्न में भी यह कल्पना महाराज के मन में नहीं आ सकती थी। इसीलिए उन्होंने इस प्रकार के विकल्प की चर्चा नहीं की थी। अपितु सत्य तो यह है कि वे यही चाहते थे कि यदि राघवेन्द्र नहीं लौटते हैं तो लक्ष्मण उनके साथ ही रहें। लक्ष्मण के अनन्यानुराग से वे

भलीभांति परिचित थे। उन्हें यह विश्वास था कि लक्ष्मण के रहते श्रीराम पर कोई विपत्ति नहीं आ सकती। फिर भी गंगातट पर श्री लक्ष्मण के द्वारा कटु शब्दों में महाराज श्री की भर्त्सना की गई। इस भर्त्सना का कारण पिताजी के द्वारा राघवेन्द्र को वन जाने देने की आज्ञा नहीं थी। यदि उनका ऐसा मनोभाव होता तो वे अयोध्या में ही महाराज दशरथ को फटकार देते। जिसे वे अनुचित मानते हैं उसे क्षमा कर ही नहीं सकते थे। इसीलिए वे जनक और परशुराम जैसे महापुरुषों को भी भरी सभा में सुना देते हैं। महराज श्री के द्वारा राघवेन्द्र के वन जाने के आदेश को उन्होंने पिता की धर्मनिष्ठा के रूप में देखा। इसीलिए वे मौनभाव से इसे स्वीकार कर लेते हैं। किन्तु गंगातट पर सुमन्त के द्वारा कहे गए वाक्यों को सुनते ही धारणा बदल गई। उन्हें लगने लगा कि जिसे ये धर्मनिष्ठ मान बैठे थे वह तो दुर्बल चरित्र का किंकर्तव्यविमूढ़ व्यक्ति मात्र था। इसलिए कटूक्तियों का प्रयोग करने में उन्हें किसी प्रकार का संकोच नहीं हुआ। हां, राघवेन्द्र ने इसमें असीम लज्जा का अनुभव किया और सुमन्त से शपथपूर्वक यह अनुरोध किया कि लक्ष्मण की कटूक्तियों को वे पिताजी तक न पहुंचने दें। किन्तु यह देखकर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता कि शपथपूर्वक किए गए इस अनुरोध का पालन सुमन्तजी ने पूरी तरह नहीं किया। भले ही उन्होंने लक्ष्मण द्व

ारा प्रयुक्त शब्दावली को महाराज के समक्ष नहीं रखा पर वे यह कहने में नहीं चूकते कि लक्ष्मण ने उनकी कठोर शब्दों में भर्त्सना की थी। वस्तुतः वे यह भली भांति जानते थे कि इस तथ्य से महाराज श्री को जितना संन्तोष प्राप्त होगा, उतना प्रभु की मधुर वाणी से उपलब्ध होने वाला नहीं है। सत्य भी यही था। श्रीराम के शील और सौजन्य से उनकी ग्लानि सौ गुनी बढ़ जाती है। वे बार-बार यह सोचते हैं कि ऐसे पुत्र को वन देकर मैंने कितना बड़ा अन्याय कर डाला है। लक्ष्मण की कटुवाणी उन्हें उसी प्रकार आश्वस्त करती है जिस प्रकार एक रोगी को कड़वी औषधि ग्रहण करते हुए यह सोचकर सन्तोष मिलता है कि इसके द्वारा वह रोगमुक्त हो जाएगा। इसके द्वारा उन्होंने एक आश्वासन प्राप्त किया कि विपत्ति के इन क्षणों में राघव के साथ एक अनन्यानुरागी भाई विद्यमान है। पर महारानी कौशल्या के अनुरोध पर वे प्राण-रक्षा के लिए प्रस्तुत नहीं होते हैं। महारानी ने उनकी तुलना एक ऐसे कर्णधार से की थी जो राघवेन्द्र के विरह-समुद्र से सारी प्रजा को पार उतार सकता था। किन्तु महाराज श्री की ग्लानि अपनी चरम सीमा पर थी।

कथा / प्रसंग

काश !!

काश !!

एक राहगीर ने गुलाब से कहा –

आहा ! तुम कितने सुन्दर और सुगन्धित हो,

काश ! तुम में कांटे न होते – तो कितना अच्छा होता !!

आगे चलकर उसने समुद्र को देखा उनसे कहा–

आहा ! तुम कितने विशाल और गहन हो,

काश ! तुम खारे न होते तो कितना अच्छा होता !!

शाम हो गई, उसने चन्द्रमा को देखा, उनसे कहा–

वाह ! तुम कितने शीतल और अमृतमय हो,

काश ! तुममें दाग न होता – तो कितना अच्छा होता !!

तीनों ने राहगीर से कहा–

हे मानव ! वाह ! तुम कितने बुद्धिमान् हो,

काश ! तुम्हारी दोष–दृष्टि न होती – तो कितना अच्छा होता !!

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Pravachan at Gita Bhawan

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Addressing Yoga Class - in Ahmedabad

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार
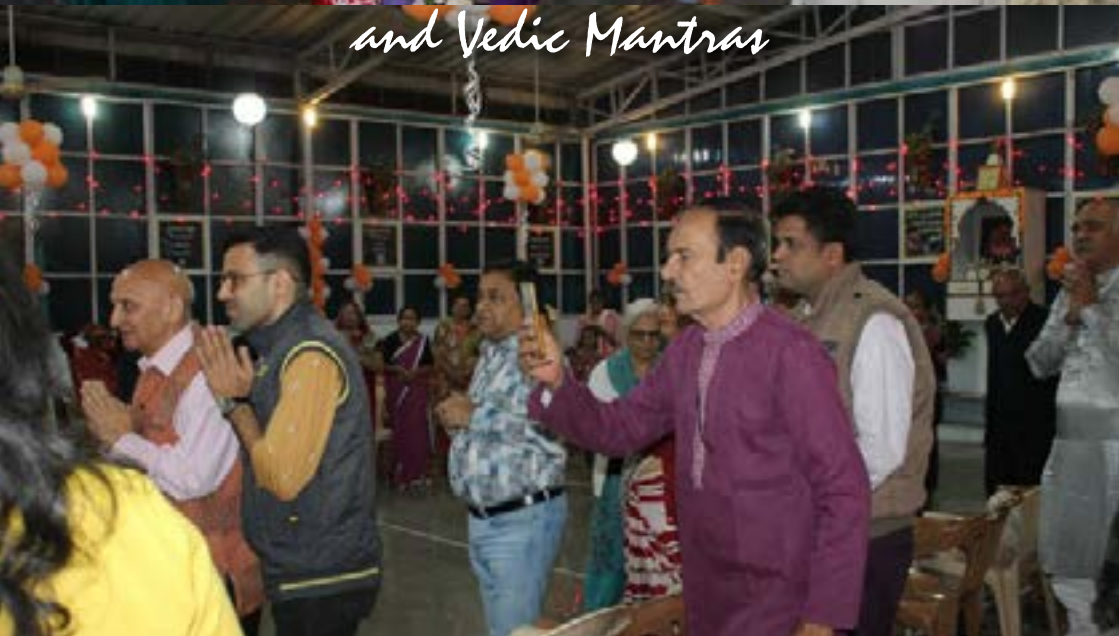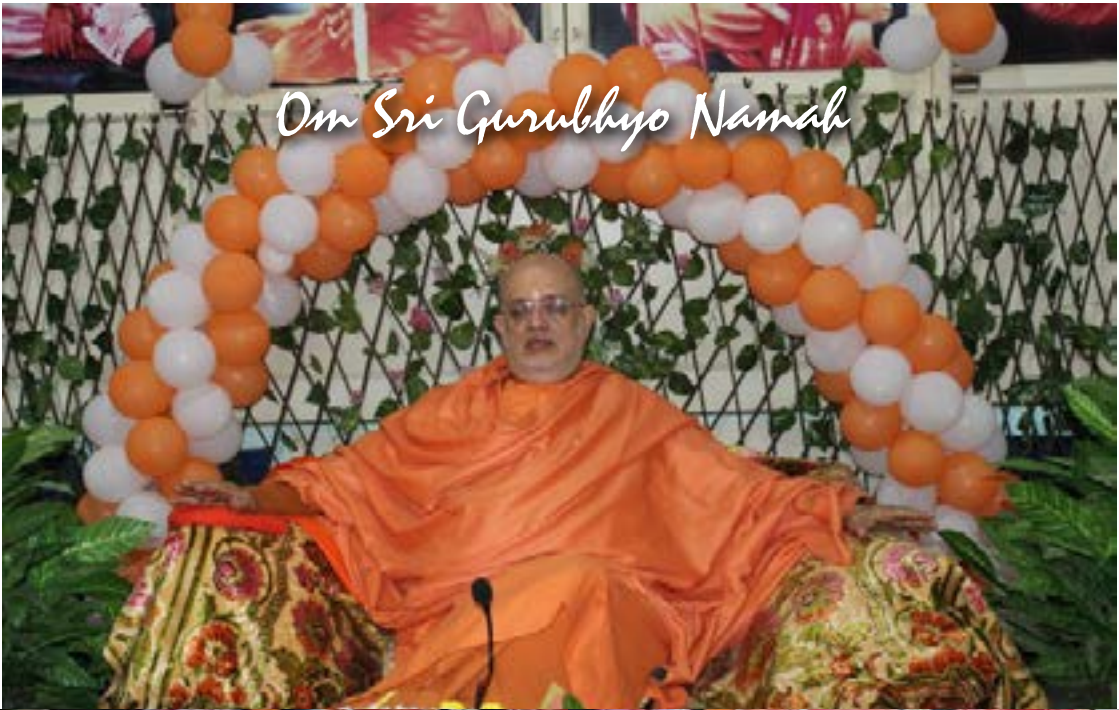
Devotees expressing their devotion in various ways

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Mayor of Indore Sh Pushyamitra Bhargava felicitating Poojya Guruji

आश्रम / मिशन समाचार

Dining Decorations on Dipawali

आश्रम / मिशन समाचार

Poojya Guruji doing Shiv-Puja

आश्रम / मिशन समाचार

Shishyas paying their respects

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Inauguration of Sri Ram Mandir replica at Indore

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Shiv Pooja & Abhishek
by Raman Puri on his Birthday
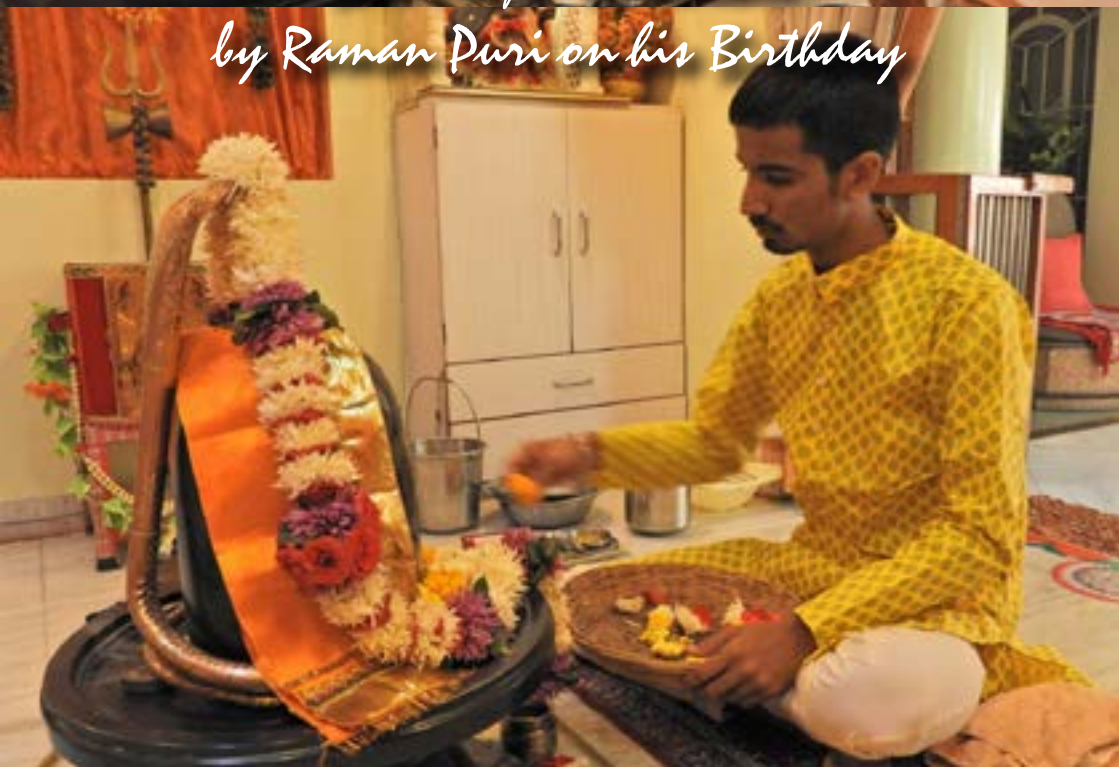
आश्रम / मिशन समाचार

Taking blessings of Poojya Guruji

ध्यान / प्रवचन / शिव अभिषेक

श्लोकपाठ / संस्कृत / प्रश्नोत्तर / भजन आदि

स्थानः वेदान्त आश्रम

सेक्टर-ई, 2948 सुदामा नगर, इन्दौर

website : www.vmission.org.in / vashram@gmail.com

/ 7000361938 / 9329487329

आश्रम / मिशन समाचार

श्रीमद् भगवद् गीता

(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः .30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

गीता ज्ञान शिविर

अध्याय - 15 (पुरुषोत्तम योग)

दि. 3 से 8 मार्च 2024;

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

एवं वेदान्त आश्रम के अन्य महात्मा

महा शिवरात्री उत्सव

दि. 8 मार्च 2024;

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

Internet News

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

(☝ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

MORAL STORIES ETC

Audio Pravachans (☜ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Sandesh - Jan '24

Vedanta Piyush - Dec '23